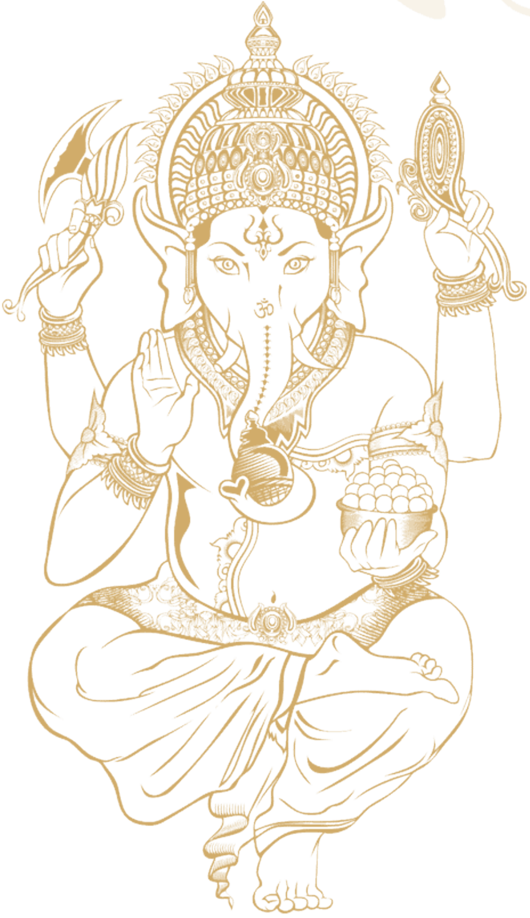

Anaya singh

12 Jan 2021

10:43 AM

Gorakhpur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121400701

तिथि 12/01/2021 **समय** 10:43:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Gorakhpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:08:47
अक्षांश 26:45:00 उत्तर **रेखांश** 83:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:03:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:14:14 घं
वेलान्तर	00:08:18 घं
सूर्योदय	06:46:59 घं
सूर्यास्त	17:22:57 घं
चैत्रादि संवत	2077
शक संवत	1942
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	14
नक्षत्र	पूर्वाषाढ़ा
योग	व्याघात
करण	शकुनि

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	भू-भूमिका
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

शुक्र 17वर्ष 3मा 5दि

शुक्र
12/01/2021
19/04/2038

शुक्र	18/08/2021
सूर्य	18/08/2022
चन्द्र	18/04/2024
मंगल	18/06/2025
राहु	18/06/2028
गुरु	17/02/2031
शनि	19/04/2034
बुध	16/02/2037
केतु	19/04/2038

योगिनी

सिद्धा 6वर्ष 0मा 15दि

सिद्धा
12/01/2021
28/01/2027

सिद्धा	08/06/2021
संकटा	28/12/2022
मंगला	10/03/2023
पिंगला	30/07/2023
धान्या	28/02/2024
भ्रामरी	08/12/2024
भद्रिका	28/11/2025
उल्का	28/01/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			10:48:27	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			28:04:00	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	चंद्र	मित्र राशि	1.68	आत्मा	पितृ	सम्पत
चंद्र			15:09:27	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.22	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			08:19:43	मेष	अश्विनी	3	केतु	गुरु	मूलत्रिकोण	1.41	कलत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			11:55:08	मक	श्रवण	1	चंद्र	राहु	सम राशि	1.30	भ्रातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु			11:13:56	मक	श्रवण	1	चंद्र	मंगल	नीच राशि	0.81	मातृ	धन	विपत
शुक्र			10:19:17	धनु	मूल	4	केतु	शनि	सम राशि	0.81	पुत्र	कलत्र	अतिमित्र
शनि		अ	08:46:47	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	स्वराशि	1.02	ज्ञाति	आयु	सम्पत
राहु	व		25:33:56	वृष	मृगशिरा	1	मंगल	राहु	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		25:33:56	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	मित्र राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

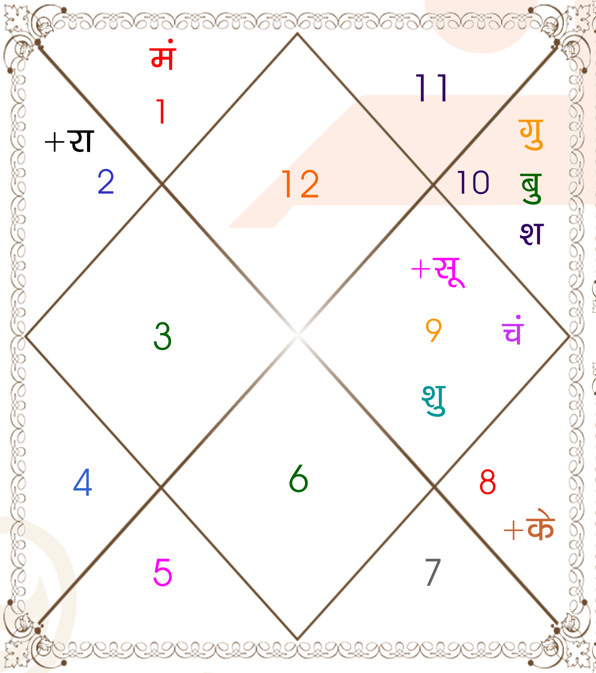

चन्द्र कुंडली

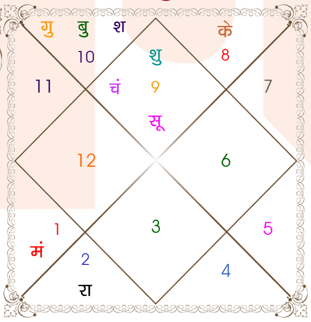

नवमांश कुंडली

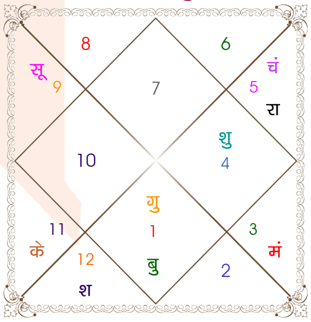

सर्वाष्टकवर्ग

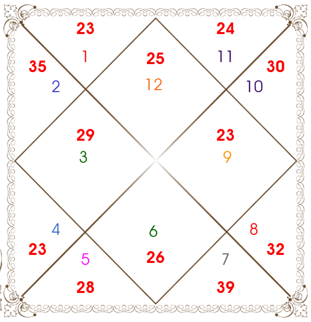

दशमांश कुंडली

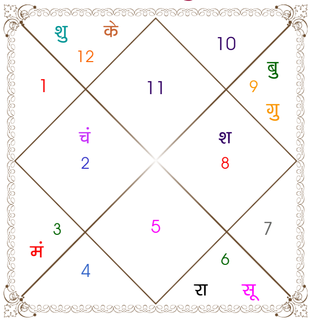

Jyotirvid Prabhat Tripathi (निधिवन ज्योतिष केंद्र)
Netaji Subhash Chandra Bose Nagar Gorakhnath Gorakhpur
9918060251
sunastrology01@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि वानर, गण मनुष्य, वर्ण क्षत्रिय, वर्ग मूषक तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "भु" या "भू" से प्रारम्भ होगा यथा- भुवनेश्वरी।

आप अपने जीवन में प्रायः समस्त सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। आप का व्यवहार अन्य लोगों के साथ अत्यन्त ही मृदु तथा प्रशंसनीय रहेगा। अतः सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आप उनके उचित सम्मान की प्राप्ति कर सकेंगी। आप अपने सम्भाषण में अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगी जिससे अन्य जनों को प्रसन्नता प्राप्त होगी। आपका चरित्र उत्तम रहेगा तथा अन्य जनों के लिए अनुकरणीय होगा। साथ ही धन सम्पत्ति आदि से भी आप प्रायः सुसम्पन्न ही रहेंगी। इनका आपके जीवन में अभाव अल्प ही रहेगा। इसके अतिरिक्त पानी पीने की इच्छा की आपके मन में प्रबलता रहेगी तथा कई बार इसे पीने की इच्छा करेंगी।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चत्रचद्वागविलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपके पति एक बुद्धिमान एवं धनवान व्यक्ति होंगे जिससे आपको जीवन में पूर्ण आनन्द तथा सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही गृहस्थ जीवन भी सुखमय रहेगा। समाज के सभी वर्गो में आप प्रिय रहेंगी तथा एक आदरणीय तथा सम्माननीय महिला समझी जाएंगी। आप सच्चे तथा स्थिर मित्रों को बनाने में रूचिशील रहेंगी। अतः आपका मित्रवर्ग बुद्धिमान एवं गुणवान रहेगा। इसके अतिरिक्त वैभव एवं ऐश्वर्य से भी आप सुशोभित रहेंगी।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आप में अन्य जनों के उपकार करने की भावना की प्रबलता रहेगी। स्वजनों के अतिरिक्त अपरिचित जनों की भलाई करने का अवसर यदि आप को प्राप्त होगा तो उसे भी आप ईमानदारी से पूर्ण करेंगी। इस प्रकार के कार्यों से आप सभी लोगों के मन में अपने प्रति आदर का भाव उत्पन्न करने में समर्थ रहेंगी। साथ ही आपका भाग्य अत्यन्त ही प्रवल

रहेगा तथा भाग्यवश ही आपके कई कार्य सम्पन्न होकर आपको सुख प्राप्ति होगी। बुद्धि से भी आप अत्यन्त तीव्र होगी तथा विविध प्रकार के शास्त्रों तथा कार्यों का आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा। अतः आप एक विदुषी के रूप में भी ख्याति अर्जित कर सकेंगी।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप स्वभाव से ही सुशील महिला रहेंगी तथा समस्त स्त्रियोचित सद्गुणों से सर्वदा सुशोभित रहेंगी। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार के सुखैश्वर्य से सम्पन्न रहेंगी। आप का चित्त हमेशा शान्त रहेगा। अनावश्यक चंचलता या व्याकुलता को आप अपने पास फटकने भी नही देंगी तथा विपत्ति काल मैं भी धैर्य और सूझ बूझ के द्वारा शान्त मन से अपनी समस्याओं का समाधान करने में सफल रहेंगी।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

आप ताम्र पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप राज्य या सरकार से नित्य धनलाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। साथ ही आप सन्तोषी स्वभाव से भी युक्त रहेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा। अतः सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। जीवन में विविध प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगी। माता पिता के प्रति आप पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी तथा उनसे भी आपको पर्याप्त धन सम्पत्ति प्राप्त होगी ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा विदुषी के रूप में आपका सम्मान होता रहेगा। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगी तथा वाहन एवं भूमि आदि जायदाद से भी सुसम्पन्न रहेंगी। धर्म के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी तथा स्वभाव में साहस का समावेश रहेगा। आप परोपकार संबंधी कार्यों में भी में तत्पर रहेंगी तथा सज्जन पुरूषों का नित्य आदर करेंगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगी।

धनु राशि में होने के कारण आपका गला तथा मुख दीर्घाकृति से युक्त रहेगा साथ ही आपके कान, ओठ तथा दान्त सुन्दर रहेंगे। आपकी भुजाएं भी स्थूल रहेगी। आप पिता के द्वारा प्राप्त धन से सम्पन्नता की अनुभूति करेंगी। आपके मन में दानशीलता का भाव भी रहेगा। अतः समय समय पर यथाशक्ति आप जरूरतमन्दों को दान आदि देती रहेंगी।

लेखन कार्य के प्रति भी आपके मन में रूचि रहेगी। अतः इसी क्रम में कविता सृजन में आप विशेष सफलता तथा ख्याति अर्जित कर सकेंगी। आप का शारीरिक बल पूर्ण होगा। भाषण देने की कला में आप अत्यन्त ही निपुण होगी तथा अपने प्रभावपूर्ण वाक्यशों के द्वारा अन्य जनों को प्रभावित करने में पूर्ण रूप से सफल रहेंगी। आप विविध प्रकार के कार्यों में भी दक्षता का परिचय देंगी। साथ ही चित्रकला के प्रति आपका विशेष सम्मान हो सकता हैं तथा इसमें विशेष योग्यता भी अर्जित कर सकती हैं। आप को गम्भीरता से कार्य सम्पन्न करना अच्छा लगेगा। धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी। बन्धुवर्ग से आपके सामान्य संबंध रहेंगे। आप प्रेम तथा स्नेह के भाव से ही वश में रह सकेंगी।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें सुन्दर तथा गोल होंगी साथ ही हाथ तथा कन्धे भी दीर्घता से युक्त होंगे। आप विशाल एवं विस्तृत वक्षस्थल की स्वामिनी होंगी। अवस्था के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव आ सकता हैं। पानी के समीप रहना या भ्रमण आदि करना आपको अत्यन्त ही प्रिय लगेगा। अतः इसके लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगी। कठिन से कठिन विषय को भी समझने की आप में बुद्धि रहेगी तथा आप सामान्यतया प्रसन्न चित्त ही रहेंगी। आपके शरीर की हड्डियां भी पुष्टता को प्राप्त होगी। साथ ही आपमें कृतज्ञता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों से उपकृत होने पर हृदय से उनका आभार प्रकट करेंगी।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक उद्यमी महिला होंगी तथा कोई न कोई कार्य करती रहेंगी निष्क्रिय होकर बैठना आपको अच्छा नहीं लगेगा। बोलने में आप अत्यन्त ही प्रवीणता का प्रदर्शन करेंगी तथा इसी चतुरता से अपने कई असाध्य कार्यो को भी सिद्ध करने मैं सफलता प्राप्त करेंगी। त्याग की भावना से भी आप युक्त रहेंगी। शारीरिक रूप से आपका कद मध्यम रहेगा तथा शूरवीर तथा साहस का भाव प्रारम्भ से ही आपके मन में विद्यमान रहेगा। आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित तथा भयभीत रहेंगे। साथ ही धनाढ्य एवं अन्य वर्ग के मध्य आप प्रिय तथा आदरणीया रहेंगी तथा इनसे आपके मधुर संबंध रहेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार की कलाओं में भी निपुण रहेंगी तथा स्वभाव से भी आपकी सुशीलता का आभास होगा। आप चरित्र से अत्यन्त निर्मल रहेंगी तथा आपका चरित्र अन्य लोगों के लिए अनुकरणीय रहेगी। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता भी होंगी तथा अपने विचारों को बिना किसी संकोच के अन्य जनों के समक्ष प्रकट करेंगी। इसके अतिरिक्त अनावश्यक आर्थिक संकट से बचने के लिए आप अपनी आय को मध्य नजर रखते हुए सोच विचार कर खर्च करेंगी।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके समस्त शरीर के अंग सुन्दर तथा सुडौलता को प्राप्त होंगे तथा अपने कुल या परिवार में आप निर्विवाद रूप से श्रेष्ठ समझी जाएंगी एवं परिवारिक जनों से यथायोग्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगी। इसके अतिरिक्त चित्रकारी या इंजीनियरिंग आदि से आप विशेष सफलता भी प्राप्त कर सकेंगी।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक निर्भय तथा बहादुर प्रकृति की महिला होंगी तथा जीवन में सत्य का पालन करने के लिए यत्नशील रहेंगी। आप स्थिर बुद्धि की स्वामिनी होंगी अतः स्थिर कर्मों की ओर ही अधिक रुचि का प्रदर्शन करेंगी अन्य लोगों के प्रति आपके मन में हमेशा स्नेह तथा आदर का भाव रहेगा। अनावश्यक वैमनस्य आप किसी के प्रति भी नहीं रखेंगी। आप के पति भी एक बुद्धिमान तथा गुणवान पुरुष होंगे जो जीवन में आपको यत्नपूर्वक समस्त सुखों की प्राप्ति करवाने में सहायक होंगे। आप की वाणी भी प्रिय एवं मधुरता के गुण से युक्त रहेंगी। शरीर से आपकी स्थूलता का भी आभास होगा।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप विविध प्रकार के गुणों से सुशोभित रहकर समाज में पूर्ण रूप से आदरणीय तथा लोकप्रिय रहेंगी। ब्राहमण, देवता तथा गुरुजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा का भाव विद्यमान रहेगा। आपकी गमन गति अत्यन्त ही आकर्षक होगी परन्तु आप में सहिष्णुता के भाव का यदा कदा अभाव ही दृष्टिगोचर होगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरुपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से ही धार्मिक प्रवृति से युक्त रहेंगी। देवता तथा ब्राहमणों में आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समयानुसार आप इनका पूजार्चन करती रहेंगी। यदा कदा आप बिना किसी कारण के ही उत्तेजित हो जाएंगी तथा छोटी छोटी बातों में अभिमान का प्रदर्शन करेंगी। मन से आप दयालु रहेंगी तथा शारीरिक बल की भी आप में पूर्णता रहेगी। साथ ही आप अन्य कलाओं के क्षेत्र में भी पूर्ण ज्ञान रखेंगी। आप अत्यन्त बुद्धिमती महिला होंगी तथा शरीर की कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। आपके द्वारा अन्य कई लोग भी सुख को प्राप्त करेंगे।

देखने में आपका सौन्दर्य अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा आपके मन में प्रारम्भ से ही दानशीलता का भाव विद्यमान रहेगा जिसका आप समय समय पर प्रदर्शन करती रहेंगी। आपकी प्रवृति सादगी से युक्त रहेगी तथा अनावश्यक दिखावा आपको पसन्द नहीं होगा। साथ ही विभिन्न कार्यों तथा शास्त्रों में निपुण होने के कारण समाज में आपका सम्मान एक विदुषी के रूप में किया जाएगा।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में पैदा होने के कारण आप में कभी कभी चंचलता का भाव व्याप्त रहेगा। मिठाई या मीठी वस्तुओं को खाने का आपको अत्याधिक शौक रहेगा। साथ ही धनदौलत के प्रति आपकी लोलुपता अधिक मात्रा में रहेगी तथा इसे प्राप्त करने के लिए अत्यन्त ही आतुरता तथा शीघ्रता का प्रदर्शन करेंगी। यदा कदा आप में कलह प्रवृति के भाव की जागृति होगी तथा अन्य जनों से विवाद होता रहेगा। आप में कामभावना की प्रबलता भी रहेगी। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी महिला होंगी तथा निर्भयता पूर्वक जीवन की समस्याओं से जूझते हुए उनका समाधान भी करेंगी।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरूष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको

अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यो में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता की वे अनुभूति करेंगे। विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी कार्यो में आप एक दूसरे का प्रेम पूर्वक सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में आपको नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी तथा आपसी संबंध भी मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के उत्पन्न होने पर संबंधों में कुछ कटुता एवं तनाव का वातावरण बनेगा लेकिन कुछ समय के बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप हमेशा सुख दुःख में उनका साथ देंगी एवं यथाशक्ति अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी। इस प्रकार आप मिलजुल कर एक दूसरे का सहयोग करेंगी।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृषराशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फल प्रदान करने वाला होगा। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यो में त्याज्य ही रखें। साथ ही इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी पूर्ण रूपेण सचेत रहे।

यदि आपके लिए समय अनुकूल न चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य शुभ कार्यों में सफलता न मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीला वस्त्र, पीला चन्दन, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान देना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलों में भी कमी होगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा 16000 जप सम्पन्न करवाने से आपके अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।